"ईर्ष्या - देवलोक में" के सभी अधिकार लेखक मयंक सक्सैना के पास ही हैं अतएव लेखक की बिना लिखित आज्ञा के इसे किसी भी पुस्तक में छापना अथवा इसका तोड़ मरोड़कर या भाषा को बदलकर बिना लेखक की लिखित आज्ञा के छापना गैर कानूनी है। चूँकि ये लेखक की एक रचना मात्र है, इसको आधार बनाकर किसी वास्तविकता पर विचार नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक का कोई भी विक्रय मूल्य नहीं रखा गया है अर्थात यह पुस्तक निशुल्क है ताकि हर कोई इसे पढ़ सके और कृपया बिना लेखक की लिखित अनुमति के इसे छापने का प्रयास न करे अन्यथा इस गैरकानूनन कृत्य के लिए आपको होने वाली परेशानी और हानि के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार होंगे।

ईर्ष्या - देवलोक में

मुख्य पात्र/ पात्र:
ईर्ष्याग्रस्त निंदक: यह व्यक्ति दूसरों के प्रति ईर्ष्या भाव रखते हुए उनकी निंदा करता रहता है और लोगों को एक-दूसरे के प्रति भड़काता रहता है अंत में भी इसको मृत्यु नसीब नहीं होती, उसकी इन्ही दुष्टता के चलते।
त्रिदेव: हिन्दू त्रिदेव, ब्रह्म, विष्णु और महेश (आशुतोष/शिव/महादेव)।
यमराज: मृत्युदेव।
यमदूत: यमराज के सेवक।
चित्रगुप्त जी: जन्म-मरण का लेखा जोखा रखने वाले।
इंद्र-देव: स्वर्ग के स्वामी, देवलोक के स्वामी, सुरराज/देवराज।
अप्सराएं: समुद्र मंथन से उत्पन्न चौदह रत्नों में से एक।
देवलोक समिति: अग्निदेव, वरुणदेव आदि।
विशिष्ट देव: देवगुरु ब्रहस्पति, वैद्यराज अश्विनी कुमार आदि।

"आशुतोष ध्यानाधीन विश्व में विचरण कर ही रहे थे की अकस्मात् उनकी द्रष्टि एक ऐसे व्यक्ति की ओर पड़ती है जो अपनी आयु पूर्ण हो जाने के उपरान्त भी जीवित है। वह सृष्टि के जन्म-मरण के चक्र को बिगड़ता देख उस व्यक्ति के समीपस्थ जाने का प्रयास करते हैं कि अचानक उनका त्रिनेत्र जो वास्तविकता का प्रतीक है, ध्यान और साधना का प्रतीक है, जो अन्तःमनन व अन्तःद्रष्टि का केंद्र है, वह ऐसा अनुभव करता है कि मानों उस व्यक्ति के निकटस्थ कोई नकारात्मक ऊर्जा है जो शिव की सकारात्मक ऊर्जा का हनन करने, उस पर अपना आधिपत्य करने को आतुर है। ऐसा अनुभव होते ही अचानक महादेव का ध्यान भंग हो जाता है और वह कैलाश से अंतर्ध्यान होकर विष्णुलोक में प्रविष्ट होते हैं।"

विष्णु जी: "महादेव आप यहाँ? कोई समस्या है क्या?"
शिव जी: "प्रिय, मैं ध्यानमग्न होकर विश्व विचरण कर रहा था कि मैंने एक व्यक्ति, जो कि आयु पूर्ण होने के उपरान्त भी जीवित है, को देखा और जैसे ही मैंने उसके निकट जाने का प्रयास किया, मुझे उसके समीप किसी नकारात्मक ऊर्जा का अनुभव हुआ और मेरा ध्यान भंग हो गया। आखिर यह रहस्य क्या है?"
विष्णु जी: "महादेव आप तो अन्तर्यामी हैं, त्रिकालदर्शी हैं, आप से कैसा रहस्य? यह प्राणी एक विशेष प्रकार के रोग से ग्रसित है और यही रोग इसके काल को इसकी सीमा के अन्दर प्रवेश नहीं होने देता। यही इसकी नकारात्मक ऊर्जा है और अगर त्रिदेव भी इसकी सीमा में प्रवेश करने का प्रयत्न करें तो संभवतः वह भी अपना ईश्वरत्व खो देंगे।"
शिव जी: "यह क्या और कैसा रोग है? और काल भला किसी बंधन में बंधा है जो आगे बंधेगा।"

विष्णु जी: "काल तो स्वयं आपके शिष्य, आपके भक्त हैं, आशुतोष। और आपका यह कथन भी सत्य है कि काल को बेड़ियों में जकड़ना या सीमाओं में बाँध पाना असंभव है। मैं आपको बताता हूँ कि यह पूरा रहस्य क्या है?"
"ये व्यक्ति जिस रोग से ग्रसित है उसे ईर्ष्या कहते हैं। कुछ ही समय पूर्व चित्रगुप्त जी विष्णुलोक में आए और उन्होंने उसी प्राणी जो की नकारात्मक ऊर्जा से आबद्ध है, ईर्ष्या से ग्रस्त है, का विवरण दिया। कहने लगे उस व्यक्ति की आयु-पूर्णता का बोध होते ही मैंने यमराज को उस प्राणी को यहाँ लाने के लिए कहा। यमराज मृत्युलोक (पृथ्वी) पर जैसे ही उसके प्राण हरने पहुँचे मानों उन्हें लगा की उन्हें सम्मोहित किया जा रहा है, मानों जैसे उन पर उस प्राणी ने द्रिश्यता में मधुर किन्तु विषप्रवृत्ति की कोई शक्ति मार दी हो और ऐसा होने के पश्चात वह यमदूतों से लड़ गए व उस कार्य को अपूर्ण छोड़कर यहाँ लौट आए। मैं चिंतित था कि यदि उस प्राणी की मृत्यु न हुयी तो जन्म-मरण का चक्र अपने अक्ष से प्रथक न हो जाए। मैंने पुनः यमराज जी से अनुरोध किया किन्तु इस बार उन्होंने केवल यमदूतों को ही उसके प्राण लेने को भेजा और साथ ही उन दूतों को यह शक्ति भी दी कि वह किसी की कैसी भी बात सूर्यास्त से पूर्व पृथ्वीलोक पर नहीं सुन पायेंगे। इसके पश्चात यमदूत उस प्राणी की आत्मा को लेने पृथ्वीलोक पहुचे और उसकी आत्मा को लेकर देवलोक लाने में सफल हुए।"
विष्णु जी (**चित्रगुप्त जी से**): "(**मुस्कुराते हुए**) तब फिर क्या समस्या है?"
चित्रगुप्त जी: "समस्या..... (**डरे हुए भाव से**)। उसे जब यहाँ लाया गया, उसके पाप और पुण्य का निर्धारण कर उसके लिए लोक सुनिश्चित किया गया, तो उसके पाप, उसके पुण्य से कई अधिक थे, अतएव उसके लिए नर्क को ही उपयुक्त माना और इस अधमी की आत्मा को नर्क में प्रक्षिप्त कर दिया गया। किन्तु यह प्राणी इतना दुष्ट है कि उसने अपना यही काला ज्ञान, अपनी नकारात्मक ऊर्जा की शक्ति वहां यातनाए भोग रहे प्राणियों पर मार दी और सुरराज की निंदा कर करके उनके (वहाँ की आत्माओं के) मस्तिष्क में ईर्ष्या का बीजारोपण कर दिया है और विद्रोह की अग्नि जलाकर स्वयं नर्क का स्वामी बन बैठा है और वहां के स्वामी को स्वयं का दास बना लिया है। इन समस्त घटनाओं की सूचना इंद्र-देव को दी जा चुकी है और संभवतः वह नर्क जाएँ। अच्छा मुझे अब आज्ञा दीजिये।"
और ऐसा कहकर वह यहाँ से चले गए। उसके बाद इंद्र-देव अप्सराओं के साथ नर्क पहुँचे किन्तु वहां विद्रोह की अग्नि इतनी विह्वल थी कि वह उस दुष्ट से साक्षात्कार करने में सफल न रह सके तो उन्होंने उस दुष्ट से मिलने के लिए एक युक्ति सोची और वहां विद्रोह समर्थकों (नर्कवासी आत्माओं) को कहा कि यह नर्क तो आपका प्रथम तल है, कुछ ही समय उपरान्त आपको विलासितायुक्त लोक में प्रवेश दे दिया जाएगा जहाँ आपको कैसी भी यातनाएं नहीं सहनी होगी। अब आप सभी इस विद्रोह को समाप्त कीजिये और नर्क के स्वामी से कहिये कि इंद्र उनसे मिलने को बेहद उत्सुक है। इंद्र-देव का यह कथन सुनकर मानों स्थानीय आत्माओं में हर्ष की लहर दौड़ पड़ी और उन्होंने विद्रोह को वही विराम दे दिया और उस ईर्ष्याग्रस्त निंदक जो उनका नेतृत्व कर रहा था व नर्क का वर्तमान स्वामी भी था, को कहा आपसे मिलने देवराज अप्सराओं के साथ यहाँ आये हैं। यह सुनकर ईर्ष्याग्रस्त निंदक अत्यंत हर्षित हो उठा, उसे लगा मानों उसे जीवनदान दे दिया गया है,
और वह बोला: "बिना विलम्ब किये शीघ्रतिशीघ्र देवराज को अन्दर लाया जाए।"
देवराज इंद्र अपनी अप्सराओं के साथ नर्क का स्वामी, ईर्ष्याग्रस्त निंदक से साक्षात्कार करने हेतु नर्क के मुख्य अतिथि कक्ष में प्रस्थान करते हैं।
ईर्ष्याग्रस्त निंदक: "क्या हुआ महाराज, आज स्वर्ग का रास्ता भूलकर नर्क में प्रवेश कैसे?"
इंद्र-देव: "दुष्ट, अधमी प्राणी, तूने क्या सोचा कि तू यहाँ विद्रोह की अग्नि जला देगा तो नर्क और स्वर्ग का स्वामी तू बन जाएगा। असंभव! कदाचित तुम किसी भ्रम में हो। मैं तुम्हे अंतिम चेतावनी दे रहा हूँ नर्क का स्वामित्व छोड़कर नर्कवासी हो जाओ अन्यथा ..."
ईर्ष्याग्रस्त निंदक: "महाराज मैं आपकी बात समझ गया। मैं ठीक वैसा ही करूँगा जैसा आप चाहते हैं पर इस पर विचार विमर्श मैं अकेले नहीं कर सकता अतः क्षण भर के लिए आप यहाँ से बाहर जाएँ और मुझे अप्सराओं से विचार विमर्श

करना है।"

इन्द्र-देव: "अप्सराओं से विचार विमर्श (चौंकते हुए)! असंभव।"

ईर्ष्याग्रस्त निंदक: "तो फिर मेरा नर्कवासी होना भी असम्भव। अब आप सब तुरंत मेरे लोक से प्रस्थान करें अन्यथा मेरे सेवक आपको यहाँ से बाहर निकाल देंगे।"

इंद्र-देव: "(**कुछ सोचकर**)... ठीक है। तुम इनसे विचार-विमर्श करो, मैं बाहर प्रतीक्षा करता हूँ।"

इंद्र प्रतीक्षालय की ओर चले जाते हैं।

ईर्ष्याग्रस्त निंदक: "आओ देवीयों। आप यह बताएं कि स्वर्ग में आप कब से हैं?"

अप्सराएं: "जब से समुद्र मंथन हुआ है और जबसे देवराज को देव-राजा और स्वर्ग को देवताओं का लोक नियुक्त किया गया है, तब से। हम समुद्र मंथन से निकले चौदह रत्नों में से एक हैं।"

ईर्ष्याग्रस्त निंदक: "अर्थात, अनुमान में समय या वर्ष कितने हो चुके हैं?"

अप्सराएं: "यही कोई लाखों वर्षों से।"

ईर्ष्याग्रस्त निंदक: "(**हँसते हुए**).. और लाखों वर्षों से आप केवल स्वर्ग अप्सराओं तक ही सीमित हैं। क्या कभी सुरराज ने आपको किसी भी लोक का स्वामित्व सौपा? क्या आपको कभी कोई ऐसा कार्य दायित्व सौंपा, जिससे सभी देवताओं के मध्य आपका मान बढ़े। नहीं न।"

अप्सराएं: (**विचाराधीन**)....

ईर्ष्याग्रस्त निंदक: "उत्तर नहीं है न आप सभी के पास? क्या आपने कभी सोचा कि यदि आप कुरूप होती तो क्या सुरराज आपको देवलोक में रहने की आज्ञा देते? क्या आपने कभी सोचा कि देवराज अपने सिंहासन को बचाने के लिए किसी तपस्वी की गहन साधना को भंग करने के लिए आपको वहां भेजते हैं और स्वयं पाप का भागी न बनते हुए आपको भागी बनाते हैं और कभी-कभी तो आपको उन ऋषि-मुनि-तपस्वियों के क्रोध का भाजन भी बनना पड़ता है। इंद्र का साथ छोडो और मेरे लोक में आओ। यहाँ की तुम रानियाँ बनोगी, कोई सेविका नहीं। यह लोक तुम्हारा अपना लोक होगा, न कि किसी का दान। विचार करो, मुझे प्रतीक्षा है तुम्हारे उत्तर की।"

अप्सराएं: "(**जिनमें अब निंदा के विष का प्रवाह होना आरम्भ हो चुका है**)... जी हाँ, हम तैयार हैं।"

ईर्ष्याग्रस्त निंदक (**सेवकों को आदेश देते हुए**): "इंद्र-देव को इस लोक से बाहर निकाल दीजिये और कहिये अब से अप्सराएं नर्कलोक की स्वामिनी हैं।"

सेवक अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करते हुए इंद्र-देव को नर्क से बाहर निकाल देते हैं, और उनसे कहते हैं कि अप्सराएं अब से नर्क लोक की स्वामिनी हैं।

इंद्र-देव रुष्ट होकर वहां से स्वर्ग लोक की ओर प्रस्थान करते हैं। इंद्र-देव अब स्वर्ग की एक विशेष सभा का आयोजन करते हैं, देवलोक समिति और विशिष्ट देवताओं की उपस्तिथि और त्रिदेवों की अनुपस्तिथि में वह निर्णय लेते हैं कि स्वर्ग और नर्क दोनों को संयुक्त करके एक नए लोक का निर्माण किया जाए ताकि किसी के मन में स्वर्ग की लालसा और नर्क की यातनाओं का भय न रहे। वास्तव में इंद्र के ऐसा करने का कारण अप्सराओं को पुनः स्वर्ग में लाना और ईर्ष्याग्रस्त निंदक की आत्मा से नर्क का स्वामी होने का अधिकार वापस लेना था। चूँकि देवलोक समिति और विशिष्ट देवताओं की उपस्तिथि में सयुंक्त लोक का प्रस्ताव रखा गया था और उस पर उन सभी की सहमति थी अतः बिना विलम्ब किये उसको शीघ्र की पारित कर दिया गया। चूँकि अब नर्क तो रहा नहीं अतः ईर्ष्याग्रस्त निंदक व अप्सराओं का स्वामित्व भी समाप्त हो गया और अब वो (ईर्ष्याग्रस्त निंदक) साधारण आत्माओं की भाँति ही है। इसी बीच देवताओं और असुरों के मध्य युद्ध आरम्भ हो गया जिसका फायदा उठाते हुए ईर्ष्याग्रस्त निंदक ने पूर्व की भाँति ही इस विशिष्ट लोक की सभी आत्माओं में इंद्र और विशिष्ट देव समिति के प्रति विद्रोह करा दिया और स्वयं पूर्व की भाँति ही इस लोक का भी स्वामी बन बैठा।

जब युद्ध-विराम हुआ तो उस ईर्ष्याग्रस्त निंदक द्वारा सभी देवताओं को शक्तिविहीन कर दिया गया। अब जब देवताओं

के पास अन्य कोई विकल्प शेष न रहा तो उन्हें त्रिदेव की शरण में आना पड़ा। सभी देवता हमारे पास आये। महादेव उस समय आप कैलाश पर मौजूद न थे, केवल मैं (विष्णु जी) और ब्रहम-देव ही थे। उन्होंने हमें संपूर्ण वाक्या, पूरी कहानी बताई जिसको सुनकर हम दोनों ने यह निर्णय दिया कि उस ईर्ष्याग्रस्त निंदक को पुनः जीवित कर पृथ्वीलोक पर भेज दिया जाए और भविष्य में चाहे यह अपनी मृत्यु के लिए कितना भी अनुरोध क्यों न करे, इसे मृत्यु न दी जाए। चित्रगुप्त जी को आदेश दिया गया कि उसका समस्त लेखा-जोखा, आप अपनी जन्म-मरण पुस्तक से नष्ट कर दें। यमराज को आदेश दिया गया कि यमदूत पुनः उसे पृथ्वीलोक पर छोड़ आयें और भविष्य में कभी भी उसको मृत्यु न दी जाए। इंद्र-देव और विशिष्ट समिति की उपस्तिथि में लागू "संयुक्त लोक प्रस्ताव" को अभी खारिज किया जाता है और स्वर्ग-नर्क दोनों लोक पुनः पूर्व की भाँति ही अपने अस्तित्व में आयेंगे।

फिर **हमनें उस प्राणी को सामने बुलाकर उससे कहा**: "तुम्हे जीवनदान दिया जा रहा है पर हमारी कुछ मांगें हैं, पहली, चूँकि तुम नर्क के स्वामी थे और नर्क पुनः अस्तित्व में आ गया है तो तुम नर्क के स्वामी होने के पद से इस्तीफा दोगे और दूसरी ये, चूँकि तुमने विशिष्ट (संयुक्त) लोक के स्वामी के पद पर रहते हुए देवताओं की शक्तियाँ क्षीण कर दी थी जिन्हें तुम पुनः प्रबल करोगे और अगर तुम ये दोनों मांगे मानते हो तो तुम्हे पुनः जीवनदान मिल जाएगा ये हमारा वचन है।"

और इस ईर्ष्याग्रस्त निंदक ने हमारी दोनों मांग स्वीकार कर ली थी।

और आशुतोष ध्यानाधीन आपने जिस प्राणी को देखा है वो यही है। हम क्षमा प्रार्थी है जो हमने आपकी अनुपस्तिथि में यह निर्णय लिया।

शिव जी: "प्रिय, आपने ऐसा कोई भी कृत्य नहीं किया जिसके लिए आपको मुझसे क्षमा मांगनी पड़े। और फिर त्रिदेव में मैं विष्णु जी भी हूँ और ब्रहम-देव भी हूँ और ऐसे ही आप दोनों में भी मैं हूँ तो मेरी उपस्तिथि में ही आपने यह निर्णय लिया।"

और इसी के साथ शिव जी कैलाश की ओर प्रस्थान करते हैं।

अब वह ईर्ष्याग्रस्त निंदक तड़प रहा है, कष्ट भोग रहा है और मृत्यु के लिए भीक मांग रहा है किन्तु मृत्युदेव यमराज और यमदूत उनकी और अपना ध्यान नहीं दे रहे हैं।

"ईर्ष्या - देवलोक में"

लेखक- मयंक सक्सैना (Mayank Saxena)
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत (AGRA, Uttar Pradesh, INDIA)

e-mail id: honeysaxena2012@gmail.com
facebook id: lovehoney2012@facebook.com
website/blog: http://authormayanksaxena.blogspot.in

You can also like this page for general knowledge and news (through your facebook Account) : http://www.facebook.com/knowledgecentre2012